THEORIES OF DEVELOPMENT OF ADOLESCENCE

किशोरावस्था के विकास के सिद्धान्त

There are two theories of development of Adolescence.

1) THEORY OF SALTATORY DEVELOPMENT

त्वरित विकास का सिद्धान्त

इस सिद्धान्त का प्रतिपादन 'Stanley Hall' ने 1904 में किया। उन्होंने 'Adolescence' नामक एक पुस्तक प्रकाशित की। इसमें उन्होंने लिखा कि किशोरावस्था में जो परिवर्तन दिखाई देते हैं वे एकदम आकस्मिक होते हैं। उनका पूर्व की अवस्थाओं से कोई सम्बन्ध नहीं होता, अर्थात बाल्यावस्था से इसका कोई संबंध नहीं होता

Stanley Hall का मत है -

"किशोर में जो शारीरिक मानसिक और संवेगात्मक परिवर्तन

होते है, वे अकस्मात होते है।"

2) THEORY OF GRADUAL DEVELOPMENT
क्रमिक विकास का सिद्धान्त

इस सिद्धान्त का प्रतिपादन किंग, थार्नडाइक और हालिंगवर्थ (Hollingworth, King Thorndike) है। इन मनोवैज्ञानिकों का कहना है कि अवस्था मे जो परिवर्तन होते है, वे अचानक न होकर धीरे-धीरे क्रमश: होते है। अर्थात सभी प्रवृत्तियां बालक मे प्रारम्भ से पायी जाती है, उनका विकास धीरे-धीरे होता है।

किंग के अनुसार

"जिस प्रकार एक ऋतु का आगमन दुसरी ऋतु के अन्त मे होता है, पर जिस प्रकार पहली ऋतु मे ही दुसरी ऋतु के आगमन के चिन्ह दिखाई देने लगते है, उसी प्रकार बाल्यावस्था और किशोरावस्था एक दुसरे से सम्बन्धित रहती है।"